कुमार जीवन - 57

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार सदा अपने को मायाजीत कुमार समझते हो? माया से हार खाने वाले नहीं लेकिन सदा माया को हार खिलाने वाले। **ऐसे शक्तिशाली बहादुर हो ना! जो बहादुर होता है उससे माया भी स्वयं घबराती है।** बहादुर के आगे माया कभी हिम्मत नहीं रख सकती। जब किसी भी प्रकार की कमज़ोरी देखती है तब माया आती है। बहादुर अर्थात् सदा मायाजीत। माया आ नहीं सकती, ऐसे चैलेन्ज करने वाले हो ना!

➳ _ ➳ सभी स्वयं को सेवा के निमित्त अर्थात् सदा विश्व-कल्याणकारी समझ आगे बढ़ने वाले हो! विश्व-कल्याणकारी बेहद में रहते हैं, हद में नहीं आते। हद में आना अर्थात् सच्चे सेवाधारी नहीं। **बेहद में रहना अर्थात् जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप को फ़ालो करने वाले श्रेष्ठ कुमार हैं, सदा इसी स्मृति में रहो। जैसे बाप सम्पन्न है, बेहद का है ऐसे बाप समान सम्पन्न सर्व खज़ानों से भरपूर आत्मा हूँ - इस स्मृति से व्यर्थ समाप्त हो जायेगा। समर्थ बन जायेंगे। (16-12-1985)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ हर परिस्थिति को एक खेल समझो

→ और सदैव स्मृति में रखो

- ये भी बीत जाएगा
  - Nothing Is Permanent In Life……

➳ _ ➳ सम्पूरण समर्पण की अवस्था

→ यह अध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था है

- इसका किसी परिस्थिति, व्यक्ति या स्थान से कोई लेना देना नहीं
  - इसका सीधा सम्बन्ध संकल्पों से है

→ समर्पण भाव का साक्षी भाव से गहरा सम्बन्ध है

→ कोई तर्क वितर्क नहीं

- राज़ी तेरी रजा में
- “जी हुज़ूर.. जी हाज़िर...” का भाव रखना

→ कोई प्रशन नहीं

- हर परिस्थिति में खुश
- हर परिस्थिति को प्रेम से स्वीकार करना है
  - विरोधाभास से नहीं